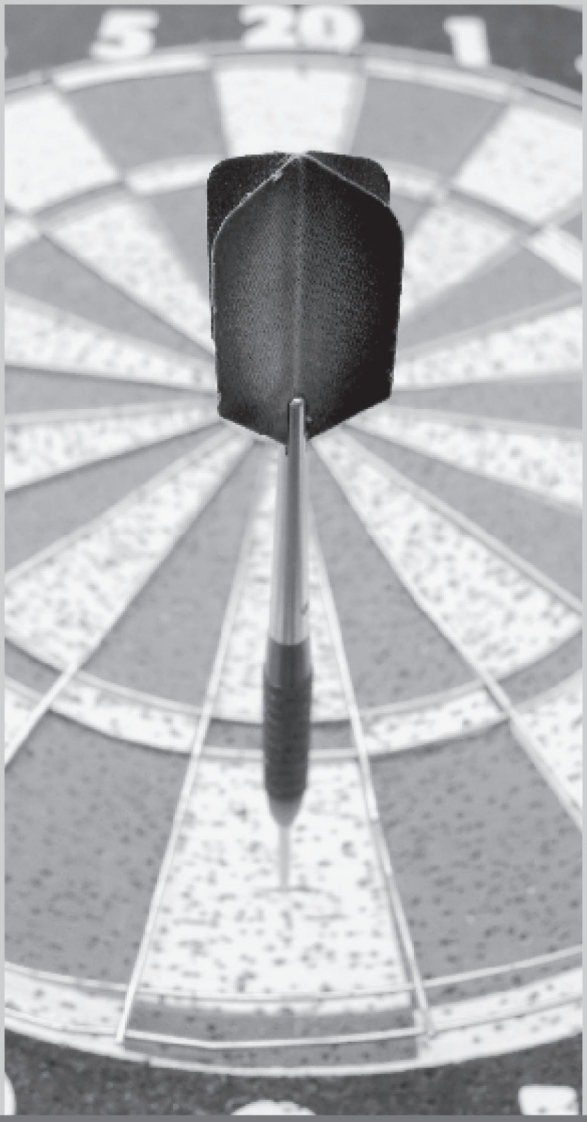

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2024

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं। आर्थिक साझेदारी

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org

(Hindi – Don't Compromise Your Calling)

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

विषयसूची

परिचय

1. इस संसार की चिंताएँ 1
2. संबंध जो आपस में बांधते हैं 3
3. प्रेम जो ठंडा पड़ चुका है 5
4. स्वीकार किए जाने की अभिलाषा 7
5. मनुष्यों की रीति से करना 8
6. एक भारी मूल्य 9
7. भय—एक घातक शत्रु 11
8. निर्णय आपका है 13

परिचय

परमेश्वर के पास हम सभी के लिए विशेष योजना है। हम में से अधिकांश विश्वास करते और समझते हैं कि हमारे जीवनों में परमेश्वर की विशेष योजना उसकी बुलाहट है। इसके अलावा, हम यह भी जानते हैं कि हमारे लिए परमेश्वर की योजना स्वचालित नहीं है। दूसरे शब्दों में, हमारे जीवनों पर परमेश्वर की बुलाहट पूर्ण करने हेतु हमें भूमिका निभानी है। हमें परमेश्वर के साथ सहयोग देना है ताकि व्यक्ति के रूप से उनकी योजनाएँ हममें और हमारे द्वारा पूर्ण हो सकें।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने हमें जो करने के लिए बुलाया है उसकी महत्ता या परिमाण मायने नहीं रखता, किन्तु सत्य यह है कि हम उस बुलाहट को पूर्ण करें। हम में से कुछ लोगों को "बड़े" कार्यों को करने और कुछ लोगों को "छोटे" कार्यों को करने की बुलाहट हो सकती है। "बड़ा" और "छोटा" केवल मनुष्य की दृष्टि में प्रतीत होता है। परंतु परमेश्वर की दृष्टि में "बड़ा" या "छोटा" समान रूप से महत्वपूर्ण है। वह तत्पर हैं कि जिन्हे "बड़े" या "छोटे" कार्यों के लिए बुलाया गया है वे अपनी बुलाहट को पूर्ण करें। "बड़े" और "छोटे" परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर और आश्रित हैं। यदि एक असफल हो जाए, तो दूसरा प्रभावित होता है। एक "बड़ा" प्रचारक जो बड़ी भीड़ में प्रचार करता है वह ध्वनि प्रणाली व्यवस्था (साउंड सिस्टम) को नियंत्रित करने वाले एक "छोटे" से अज्ञात तकनीकी कर्मचारी पर निर्भर रहता है। क्या होगा, यदि तकनीकी कर्मचारी अपने काम को नही करे, या गलत रीति से करे?

जबकि, हम सभी चाहे "बड़े" या "छोटे" कार्यों को करने के लिए बुलाए गए हों हमें उन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा जो हमे परमेश्वर की बुलाहट को पूर्ण करने में बाधा डालती है। फिर, शैतान

भी है जो हमें परमेश्वर की बुलाहट का पालन करने से रोकने का प्रयास करता है। हम में से कुछ लोगों ने बड़े उत्साह के साथ परमेश्वर की योजना का अनुसरण करना प्रारंभ तो किया है और कहीं न कहीं समझौता कर उसकी योजना का निरंतर अनुसरण करना बंद कर दिया। हम कहीं रास्ते में रुक गए। हो सकता है हम भटक गए हों और परमेश्वर के राज्य में चलने की अपेक्षा, हम अपनी ऊर्जा सफलता, धन और व्यक्तिगत उपलब्धियों की प्राप्ति में लगा रहे हों। हम में से कुछ दैनिक जीवन के कार्यों मे इतना व्यस्त हो गए होंगे हम हमारी स्वर्गीय बुलाहट के प्रति उत्तरदायी बनने में लापरवाह हो गए। परमेश्वर का वचन जो हमें प्राप्त हुआ, वह दर्शन, वह स्वप्न जो हमें पवित्र आत्मा से प्राप्त हुए एक कोने में डाल दिए गए। या तो हम उन्हे भूल गए या डर और अविश्वास के कारण हमने जानबूझकर उन्हे नकार दिया। इस पुस्तक का उद्देश्य हमें हिला कर याद दिलवाना है और उन जालों से सावधान करने के उद्देश्य से लिखी गई है जिनमें हम फंस सकते हैं, कहीं ऐसा न हो कि हम अच्छी लड़ाई लड़ने और उस दौड़ को पूरा करने से चूक न जाएं जो हमारे सामने रखी गई है।

परमेश्वर आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
इस संसार की चिंताएँ

बहुत से लोग जिन्होंने प्रेरित पौलुस के साथ मिलकर कार्य किया या जो सेवकाई में उसके साथ सहभागी थे और जिनका उसने अपने लेखों में भी उल्लेख किया है। ऐसा ही एक व्यक्ति है जिसके विषय में पौलुस ने तीन विभिन्न स्थानों पर लिखा है। पौलुस ने फिलेमोन के नाम अपनी पत्री में देमास को अपना "सहकर्मी" कहकर उद्त किया है (फिलेमोन 1:24) और कुलुस्सियों (कुलुस्सियों 4:14) को अभिवादन भेजने में उसके नाम को सम्मिलित किया है। किन्तु, अगली बार जब पौलुस उसके नाम को उद्त करता है वह अंतिम बार होता है, वह लिखता है, *"... क्योंकि क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है और थिस्सलुनीके को चला गया है। क्रेसकेंस गलातिया को और तीतुस दलमतिया को चला गया है।"* (2 तीमुथियुस 4:10)। कल्पना कीजिए, वह व्यक्ति जिसने प्रेरित पौलुस के साथ कंधे से कंधा मिलकर कार्य किया और उसका सहकर्मी भी रहा, वह संसार के धोखे में पड़कर वह सेवकाई छोड़ और प्रेरित पौलुस से अलग होकर इस संसार में स्वयं की योजनाओं मे आगे बढ़ने लगा।

हम में से प्रत्येक को इस संसार के आकर्षणों और चिंताओं से अपने हृदय को सुरक्षित रखना है। एक ओर, जीवन इतना आसान और इतना आरामदायक बन सकता है कि हम अपनी स्वर्गीय बुलाहट के अनुसरण की आवश्यकता को भूल जाते हैं। दूसरी ओर, हमारा जीवन हम पर सारी समस्याओं और चिंताओं का इतना बोझ डाल देता है कि हम उन सभी चुनौतियों से जीतने और सफल बनने में व्यस्त हो जाते हैं और अपनी बुलाहट को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। यीशु ने

कहा, *"... और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और और वस्तुओं का लोभ उन में समाकर वचन को दबा देता है। और वह निष्फल रह जाता है"* (मरकुस 4:19)। संसार को, इसकी समस्याएँ या सुख—उन वचनों को आपसे न छीन पाये जो परमेश्वर ने आपके जीवन के लिए कहे हैं!

2
संबंध जो आपस में बांधते हैं

जबकि प्रेम और चिंता करने वाले परिवार और मित्रों का होना एक अच्छी बात है, कभी कभी, यही रिश्ते यह संबंध ही हमे बांधकर परमेश्वर की बुलाहट का अनुसरण करने से रोकते हैं। कितने ही युवा पुरुष और महिलाओं ने अपने माता पिता की अभिलाषाओं को पूर्ण करने हेतु परमेश्वर की बुलाहट से समझौता कर लिया और उन सब कार्यों को किया जिन्हे परमेश्वर ने उनके लिए कभी नहीं चाहा था। लूका का सुसमाचार निम्नलिखित का उल्लेख करता है, *"उस ने दूसरे से कहा, मेरे पीछे हो ले; उस ने कहा; हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं। उस ने उस से कहा, मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना। एक और ने भी कहा; हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूंगा; पर पहिले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं। यीशु ने उस से कहा; जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नही"* (लूका 9:59-62)।

पारिवारिक दायित्व को निभाने से पहले परमेश्वर की बुलाहट को प्राथमिकता देनी होगी। यह दायित्वहीनता या अपने परिवारों की उपेक्षा करने का अनुज्ञा पत्र नहीं है। बल्कि, प्राथमिकता का क्रम है जो मायने रखता है। परमेश्वर और उसके राज्य के प्रति हमारा समर्पण हमारे सांसारिक रिश्तों से पहले है। *"यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़के बालों और भाइयों और बहिनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता"* (लूका 14:26)। क्या ऐसे रिश्ते या ऐसी मित्रताएँ हैं जो परमेश्वर की बुलाहट का अनुसरण करने से हमें रोक रहे हैं? हो सकता

है हमने शुरुआत अच्छी की है किन्तु हम इस बात से अनजान हैं अन्य संबंधों की तुलना में यीशु को कम प्राथमिकता दी गई है। इन सब को व्यवस्थित करने का समय आ गया है!! हमारे सांसारिक रिश्तों के कारण हम परमेश्वर की बुलाहट को नहीं त्याग सकते।

3
प्रेम जो ठंडा पड़ चुका है

आज परमेश्वर के प्रति आपकी लालसा (जुनून या जोश) कितनी प्रबल है? क्या आप परमेश्वर के भवन और उसके कार्यों के लिए उत्साह से भरे हैं? यीशु के विषय में लिखा था, *"क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते जलते भस्म हुआ"* (भजन संहिता 69:9; यूहन्ना 2:17)। क्या परमेश्वर को खोजना और उसकी सेवा करना सुविधा का विषय है न कि प्राथमिकता का? क्या आपके पास जब समय होता है तब आप प्रार्थना करते हैं या तब प्रार्थना के लिए समय निकालते हैं? क्या आप एक धार्मिक दायित्व कि पूर्ति हेतु या केवल अपने विवेक को शांत करने के लिए कलीसिया में जाते हैं या आप इसलिए ऐसा करते हैं क्योंकि यही आपका आनंद है? भजनकार ने ऐसा कहकर अपनी अभिलाषा व्यक्त की, *"एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं"* (भजन संहिता 27:4)। या शायद आप कहते हैं कि आप परमेश्वर से प्रेम करते हो, परन्तु यह अग्नि अब उतनी तीव्र नहीं रही जितनी पहले हुआ करती थी! प्रेम जो ठंडा हो गया है। यह एक ऐसा प्रेम है जो वही करेगा जो सुविधाजनक है, न कि वह जो उसका आदेश है। यदि आप केवल वही करते हैं जो सुविधाजनक है, न कि वह जो उनका आदेश है, आप उसकी बुलाहट कभी पूरा नहीं कर पाएंगे।

यदि हम परमेश्वर की बुलाहट को पूर्ण करना चाहते हैं, तो हमें सम्पूर्ण हृदय, प्राण और पूर्ण शक्ति से परमेश्वर से प्रेम करना होगा (मरकुस 12:30)। हमें सम्पूर्ण हृदय से उसको खोजने के लिए स्वंय

को जगाना होगा। हमें उसे अपना सर्वश्रेष्ठ देने हेतु भरसक प्रयास करना होगा।

4
स्वीकार किए जाने की अभिलाषा

हर कोई हमारे जीवन में परमेश्वर की बुलाहट का अनुसरण करने हेतु हमारी प्रशंसा, सराहना या हमारा गुणगान नहीं करेगा। यदि हम केवल लोगों की दृष्टि में स्वीकृति प्राप्त करने के लिए जीते हैं, तो हो सकता है कि हमसे निकट रहने वाले लोग भी निराश हो जाएं। तब, हम वह करने के लिए स्वतंत्र नहीं होंगे जो परमेश्वर हमसे करवाना चाहता है। अत: हम वो करने के लिए स्वतंत्र नहीं होंगे जो परमेश्वर हम से चाहता है। हमारी प्राथमिकता हमारे स्वर्गीय पिता को प्रसन्न करना होना चाहिए। यीशु ने कहा, *"मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता, तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?"* (यूहन्ना 5:41,44)। अधिकांश लोग अपने जीवन में परमेश्वर की बुलाहट से समझौता कर लेते हैं क्योंकि वे स्वंय को एक ऐसी स्थिति मे डाल देते हैं जहां उन्हे लोगों को या संगठनों (या संप्रदायों) को भी प्रसन्न करना पड़ता है। इसीलिए जब परमेश्वर उन्हे कुछ नया और कुछ भिन्न करने के लिए बुलाता है, कुछ ऐसा जो दूसरों को अनोखा दिखाई दे, वे अस्वीकार किए जाने के भय से बाहर निकलकर आगे बढ़ने असमर्थ हो जाते हैं। हम मूर्खता की वकालत नहीं कर रहे हैं कि जहां हमें जो ठीक दिखाई पड़ता है वही कर रहें हैं, चाहे भक्तिमान लोग भी इसे अस्वीकार करते हों। हम जिस बारे में बात कर रहे हैं वह व्यक्ति की प्रशंसा से ऊपर परमेश्वर की आज्ञाकारिता को रखना है। आज आप कहाँ हैं? क्या आप मनुष्य की दृष्टि में प्रशंसा पाने की आवश्यकता के बिना भी परमेश्वर के बुलाने पर कुछ भी करने में समर्थ हैं?

5
मनुष्यों की रीति से करना

हमें न केवल हमारे जीवन के उद्देश्य के बारे में स्वर्ग से सुनना है, बल्कि वहाँ तक पहुंचने हेतु परमेश्वर के निर्देश की भी आवश्यकता है। हम स्वंय के द्वारा बनाई गई रीतियों द्वारा स्वर्गीय बुलाहट को पूर्ण नहीं कर सकते। बुलाहट और उस बुलाहट को पूर्ण करने की रीति दोनों परमेश्वर द्वारा प्राप्त होनी चाहिए। प्रेरित पौलुस लिखता है, *"परन्तु परमेश्वर की, जिस ने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, जब इच्छा हुई, कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊं; तो न मैं ने मांस और लहू से सलाह ली,"* (गलातियों 1:15,16)। हम जिन चीजों का परमेश्वर की बुलाहट को पूर्ण करने में करते हैं—क्या वे विचार, तरीके, कार्यक्रम, रणनीतियाँ परमेश्वर की ओर से हैं या हमारी अपनी ओर से? क्या वह स्वर्ग से आते हैं या शरीर से? उनके पीछे की प्रेरणा क्या है? क्या हम परमेश्वर का अनुसरण कर रहे हैं या किसी मनुष्य का अनुकरण?

हमें अपने विचारों को पवित्र आत्मा की अगुवाई में समर्पित करने की आवश्यकता है। हमारे भीतर परमेश्वर की सेवा और उसके राज्य के लिए कार्य करने का उत्साह होना चाहिए, परंतु यह पवित्र आत्मा की अगुवाई के समर्पण में होना चाहिए। हमें "जाना" है इसलिए नहीं कि दूसरे भी "जा" रहे हैं या किसी ने हमें "जाने" के लिए कहा। हमें इसलिए "जाना" है क्योंकि परमेश्वर हमें भेज रहा है, और हमें वहाँ जाना है जहाँ वह हमें भेज रहा है। परमेश्वर की बुलाहट को पूर्ण करने की कुंजी हर कदम पर उसके मार्गदर्शन का पालन करना है।

6
एक भारी मूल्य

परमेश्वर की बुलाहट बिना मूल्य के नहीं है। उसमें बलिदान, सताव और कठिनाइयाँ, जोखिम उठाना और बहुत कुछ सम्मिलित है। यीशु ने उसके पीछे चलने की कीमत के बारे में बात की। उसने हमें कीमत आँकने के लिए कहा।

लूका 14:28-33

28 तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की बिसात मेरे पास है कि नहीं?
29 कहीं ऐसा न हो, कि जब नेव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखने वाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें।30 कि यह मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर सका?
30 यह मनुष्य बनाने तो लगा पर तैयार न कर सका?
31 या कौन ऐसा राजा है, कि दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहिले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर उसका साम्हना कर सकता हूं, कि नहीं?
32 नहीं तो उसके दूर रहते ही, वह दूतों को भेजकर मिलाप करना चाहेगा।
33 इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

यीशु के पीछे चलने का मूल्य क्या है? सब कुछ! यीशु ने कहा हमें सब कुछ त्यागना पड़ेगा। "त्यागने" का अर्थ है वह अब हमारा नहीं है। परमेश्वर उसका स्वामी है और जो हमारे पास है वह उसके साथ हमें कुछ भी करने को कह सकता है। बात यह नहीं है कि हमारे पास क्या है और कितना है। क्या हमने परमेश्वर के लिए सब कुछ त्याग दिया? या अभी भी हमारे जीवन में—संपत्ति, योजनाएँ, लक्ष्य, आदतें, रिश्ते हैं—कि यदि परमेश्वर हमें त्यागने, या दे देने, दूर रखने,

या उनके बिना रहने को कहे, तो क्या यह हमारे लिए कठिन होगा? क्या परमेश्वर हमारे धन का स्वामी है या हम उसके इकलौते स्वामी हैं? यह मायने नहीं रखता कि हम कितना त्याग करते हैं किन्तु यह कि हम क्या नहीं त्यागते जो परमेश्वर की बुलाहट को पूर्ण करने या न करने को निर्धारित करता हो। कुछ लोगों ने बहुत कुछ त्याग किया, किन्तु कुछ छोटी चीजें हैं जो उन्होंने नहीं त्यागी जो उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट की भरपूरी में प्रवेश करने से उन्हें रोकती उन कुछ वस्तुओं को त्यागने का मूल्य सारी अन्य सभी वस्तुओं को त्यागने के मूल्य से कहीं बढ़कर है। परंतु परमेश्वर यही पूछ रहा है! क्या कीमत चुकाने के लिए बहुत अधिक है? याद रखें कि हमारे जीवन में परमेश्वर की स्वीकृति का प्रतिफल उससे कहीं अधिक बड़ा है! आपके जीवन पर परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु क्या आप कीमत चुकाएंगे?

7
भय—एक घातक शत्रु

अधिकांश लोग भय के कारण परमेश्वर की बुलाहट से समझौता कर लेते है—असफलता का भय, भविष्य का भय, कमी का भय या मनुष्य का भय। वे बाहर निकल कर परमेश्वर की बुलाहट का अनुसरण नहीं कर पाते क्योंकि इस भय ने उन्हें बांध रखा है। कुछ विचार करते होंगे, परमेश्वर चाहता है, "मैं एक विशेष स्थान में जाकर एक कलीसिया स्थापित करूँ किन्तु यदि मैं असफल हो गया तो? क्या पता कलीसिया कभी बढ़ न पाए तो?" असफलता का भय उन्हें आगे कदम बढ़ाने से रोकता है। हमें इस बात का ध्यान रखना है कि परमेश्वर ही हमें *मसीह में जयवन्त* बनाता है (2 कुरिन्थियों 2:14)। इसीलिए हम अपनी निर्भरता परमेश्वर में रखते हैं। हमें सफलता और असफलता को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखना है। सफलता का अर्थ है परमेश्वर की इच्छा पूरी करना और जो उसने हमें करने की आज्ञा दी है उसे पूरा करना है। यह संख्या में नहीं, उपलब्धियों में नहीं और न ही प्रसिद्धि में है।

कुछ भविष्य के भय में बंधे हुए हैं। वे विचार करते हैं, "यदि मैं वही करूँगा जो परमेश्वर मुझसे अभी करवाना चाहता है, तो उसके बाद क्या होगा?" वे इसलिए भयभीत हैं क्योंकि वे भविष्य को नहीं देख सकते। परमेश्वर हमें सब कुछ तुरंत नहीं दिखाता। वह हमारी अगुवाई करता है—एक समय में एक कदम। परमेश्वर अंत को आरंभ से ही जानता है। वह जानता है कि आगे क्या होगा। हमें जो करना आवश्यक है, वह है उस पर विश्वास करना और वही करना है जो वह चाहता है कि हम जीवन की वर्तमान ऋतु में करें। हमारे लिए योजना बनाना आवश्यक है, परंतु परमेश्वर की आज्ञा मानना उससे अधिक महत्वपूर्ण है। कभी-कभी, जिस योजना के बारे में हम सोचते हैं, उस योजना से

प्रभु के वचन और उसके निर्देश मेल नहीं खाते। किन्तु हमें फिर भी आज्ञा माननी है!

कुछ कमी-घटी के भय में बंधे हुए हैं। वे इसलिए भयभीत हैं कि यदि वे परमेश्वर की बुलाहट के अनुसार चलेंगे तो उनकी दैनिक आवश्यकताएँ पूर्ण नहीं होंगी। यीशु ने हमें बताया, *"परमेश्वर पर विश्वास रखो"* (मरकुस 11:22)। परमेश्वर ने आवश्यकताओं को पूरा करने का वचन दिया है। उसके वचन में विश्वास आपके हृदय से भय को निकालने पाए!

अन्य लोग मनुष्य के भय से बंधे हुए हैं। वे दूसरों से भयभीत रहते हैं—ऐसे लोग जो उन पर अत्याचार कर सकते हैं और कभी-कभी शायद, दूसरे सेवकों द्वारा भी। बाइबल बताती है, *"मनुष्य का भय खाना फन्दा हो जाता है, परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह ऊंचे स्थान पर चढ़ाया जाता है"* (नीतिवचन 29:25)। परमेश्वर में विश्वास द्वारा, आप उस भय के विरुद्ध आगे बढ़ सकते हैं जिसने आपको जकड़ा हुआ है। याद रखें परमेश्वर ने यहोशू से क्या कहा जब उसने नेतृत्व की कमान संभाली। क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी? *"हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहां जहां तू जाएगा वहां वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा"* (यहोशू 1:9)। परमेश्वर में हियाव बान्धें। परमेश्वर में आपका विश्वास आपको उसकी बुलाहट का अनुसरण करने हेतु स्वतंत्र करे!!

8
निर्णय आपका है

परमेश्वर के साथ हमारे चलने की एक अद्‌त बात यह है कि हम अपने हृदय में परमेश्वर को खोजने का लक्ष्य रख सकते हैं और ऐसा कर सकते हैं। हम पश्चाताप करके बदल सकते हैं। हम परमेश्वर के साथ आगे बढ़ सकते हैं। वास्तव में, हमें ऐसा करना भी चाहिए। परंतु, यदि हमने गलत चुनाव किए हों और समझौता किया हो, और मुसीबत में फ़स गए हों, फिर भी परमेश्वर हमें बाहर निकाल सकता है। भजनकार कहता है, *"उसने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है"* (भजन संहिता 40:2)। हमारे लिए महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपने जीवन की सच्चाई से जांच करें और आवश्यक परिवर्तन करने के लिए परमेश्वर का सामर्थ प्राप्त करें।

क्या आपने अपनी बुलाहट के साथ समझौता कर लिया? क्या आप सम्पूर्ण हृदय के साथ परमेश्वर की बुलाहट का अनुसरण कर रहे हैं? आज आपको अपने जीवन में परमेश्वर की बुलाहट के साथ स्वयं को पूरी तरह से जोड़ने के लिए किन परिवर्तनों को लाने की आवश्यकता है?

हमारे पास एक विकल्प है। हम जीवन में उद्धार पाकर आगे बढ़ सकते हैं, फिर भी अपने सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर की बुलाहट का (बुलावे का) अनुसरण नहीं कर सकते। हम स्वर्ग चले जाएंगे, फिर भी, ऐसा कोई फल नहीं होगा जिसे हम अनंतकाल में अपने साथ ले जाएं। दूसरी ओर, हमारे जीवन में परमेश्वर की बुलाहट को खोजने के लिए जो भी आवश्यक है वह हम कर सकते हैं। शायद हम पृथ्वी

पर मूर्ख प्रतीत हो सकते हैं। हालाँकि, जब हम स्वर्ग पहुँचते हैं और हमारे कार्यों को अग्नि द्वारा परखा जाता है, तब हमें ऐसा प्रतिफल मिलेगा जो अनंतकाल तक बना रहेगा। प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस को यह कहते हुए उपदेश दिया, *"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो"* (2 तीमुथियुस 2:15)। इसके लिए हमारी ओर से कुछ प्रयास की आवश्यकता होगी। ऐसे कार्यकर्ता बनें जिन्हें परमेश्वर के द्वारा स्वीकृती दी गई हो और वह लज्जित न हों। परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु स्वयं को तैयार करने के लिए समय और प्रयास आवश्यक हैं। बलिदान और चुनौतियाँ होंगी। किन्तु हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए।

इस अंतिम समय में, परमेश्वर को ऐसे पुरुष और स्त्री चाहिए जो सम्पूर्ण रीति से उसकी बुलाहट के प्रति के प्रति 100% प्रतिबद्ध हों। उसे ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो पूरी तरह से उसके सामने समर्पित हो जाएं—ऐसे लोग जो समझौता नहीं करें ।

हम आपको प्रेरित पौलुस के शब्दों से प्रोत्साहित करना चाहते हैं।

फिलिप्पियों 3:12-14

12 यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिए दौड़ा चला जाता हूं, जिस के लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था।

13 हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं: परन्तु केवल यह एक *काम करता हूं*, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ।

14 निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

जिसके लिए यीशु ने आपको पकड़ा है *"उसे प्राप्त करने के*

लिए" आगे बढ़ते रहें। अंतिम रेखा की ओर बढ़ते जाएं। अपनी स्वर्गीय बुलाहट में आगे बढ़ते रहें। उसके लिए कुछ प्रयास की ज़रूरत होगी, परंतु वह इसके योग्य होगी! अपने जीवन में परमेश्वर की बुलाहट से समझौता न करें!!

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

***परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"* (रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" (प्रेरितों के काम 10:43)।

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा "(रोमियों 10:9)|

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापों का

दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें**: apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें : **contact@apcwo.org**

मुफ्त प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses-Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

किशोरों
व्यक्तिगत समायोजन
सम्बंधपरक चुनौतियां
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले
कार्य सम्बंधित मुद्दे
परिवार/दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक
आत्मिक समस्याएं
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी
व्यवहार सम्बंधी विकार
व्यक्तित्व विकार
मनोवैज्ञानिक/भावनात्मक समस्याएं
तनाव / आघात
शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल
जिंदगी की सीख

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* ***apcwo.org/give***

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

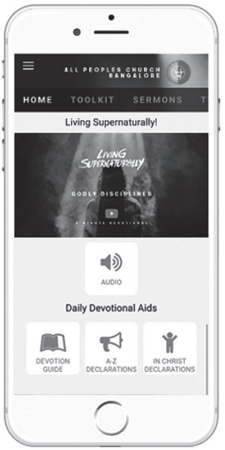

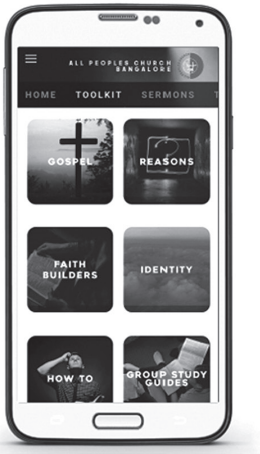

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी)में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (D.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

आप सभी चाहे "बड़े" या "छोटे" कार्यों को करने के लिए बुलाए गए हैं, आपको उन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा जो हमें परमेश्वर की बुलाहट को पूर्ण करने में बाधा डालती हैं।

हो सकता है हम भटक गए हों और परमेश्वर के राज्य में चलने की अपेक्षा, हम अपनी ऊर्जा सफलता, धन और व्यक्तिगत उपलब्धियों की प्राप्ति में लगा रहे हों। परमेश्वर का वचन जो हमें प्राप्त हुआ, वह दर्शन, वह स्वप्न जो हमें पवित्र आत्मा से प्राप्त हुए एक कोने में डाल दिए गए।

इस पुस्तक का उद्देश्य आपको हिला कर याद दिलवाना है। यह हमें कुछ जालों से सावधान करने के उद्देश्य से लिखी गई है जिनमें हम फंस सकते हैं। अच्छी लड़ाई लड़ें और वह दौड़ पूरी करें जो आपके सामने रखी गई है।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org